University in News on 27 May 2023

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

शिल्पकला महाविद्यालय में होगी संगीत की भी पढ़ाई

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय का शिल्पकला महाविद्यालय आने वाले दिनों में मूर्तिकला, चित्रकला, टेक्सटाइल डिजाइन के साथ ही गीत और संगीत जैसे परफॉर्मिंग आर्ट वाले पाठ्यक्रमों के लिए भी जाना जाएगा। विवि प्रशासन अपने फाइन आर्ट फैकल्टी में अब इन पाठ्यक्रमों को शामिल करने की तैयारी कर रहा है। ऐसा होने पर महाविद्यालय में विजुअल और परफॉर्मिंग आर्ट दोनों के पाठ्यक्रम पढ़ाए जाएंगे।

विजुअल आर्ट के साथ ही अब परफॉर्मिंग आर्ट की ओर बढ़ेगा महाविद्यालय

लविवि का कला एवं शिल्प महाविद्यालय देश के सबसे पुराने कला महाविद्यालयों में से है। इसकी स्थापना लविवि से भी पहले हुई थी। लविवि की स्थापना 1921 में जबकि शिल्पकला महाविद्यालय की स्थापना 1911 में हुई थी। उस समय देश भर में इस तरह के गिने-चुने कॉलेज ही थे। 1911 में अपनी स्थापना से लेकर 1975 तक स्वायत्त संस्था के रूप में चलता रहा। 1975 में कॉलेज को लविवि में मिला दिया गया। इसके बावजूद शासन की ओर से कॉलेज और विवि का बजट अलग-अलग दिया जाता है। महाविद्यालय का बजट फ्रीज होने के बाद से हर साल शासन से 96 लाख रुपये का बजट दिया जाता है।

इन पाठ्यक्रमों का होता है संचालन

■ बीवीए-पेंटिंग रेग्युलर-18 सीट ■ बीवीए-पेंटिंग सेल्फ फाइनेंस-14 सीट ■ बीवीए-अप्लाइड आर्ट रेग्युलर-18 सीट ■ बीवीए-अप्लाइड आर्ट सेल्फ फाइनेंस-14 सीट ■ बीवीए-मूर्तिकला रेग्युलर-14 सीट ■ बीवीए-मूर्तिकला सेल्फ फाइनेंस-5 सीट ■ बीएफए- टेक्सटाइल डिजाइन सेल्फ फाइनेंस- 10 सीट ■ डिप्लोमा इन आर्ट मास्टर ट्रेनिंग-रेग्युलर-18 सीट ■ डिप्लोमा इन होम आर्ट एंड होम क्राफ्ट-रेग्युलर-10 सीट ■ डिप्लोमा इन फर्नीचर डिजाइन-रेग्युलर- 10 सीट ■ डिप्लोमा इन ऑयरन एंड हेवी मेटल वर्क- रेग्युलर- 10 सीट ■ डिप्लोमा इन वुड वर्क- रेग्युलर- 10 सीट ■ एमवीए-अप्लाइड आर्ट- 20 सीट ■ एमवीए-पेंटिंग-35 सीट ■ एमवीए-मूर्तिकला- 12 सीट

"शिल्पकला महाविद्यालय अपनी तरह का इकलौता महाविद्यालय है। यहां पर इस समय विजुअल आर्ट की पढ़ाई होती है। संकाय को अब परफॉर्मिंग आर्ट के रूप में भी विकसित किया जाएगा। इसके बाद यहां पर गीत-संगीत पर आधारित पाठ्यक्रमों का संचालन हो सकेगा। -प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति लविवि

भातखंडे ही है एकमात्र केंद्र

इस समय लखनऊ में सरकारी क्षेत्र में भातखंडे संगीत सम संस्थान ही गायन और वादन पर आधारित पाठ्यक्रमों का बड़ा केंद्र है। लविवि में संगीत की शिक्षा शुरू होने पर इसे बढ़ावा मिलेगा और दाखिले के लिए होने वाली मारामारी में कमी आएगी।

नियमित पीएचडी को पार्ट टाइम में बदल सकेंगे छात्र

माई सिटी रिपोर्टर

शोध के दौरान नौकरी लगने वाले छात्रों को लविवि देगा सुविधा

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के विद्यार्थी नियमित पीएचडी को पार्ट टाइम पीएचडी में बदलवा सकेंगे। इसके लिए विश्वविद्यालय पीएचडी के अध्यादेश में संशोधन कर प्रावधान करने जा रहा है। इससे शोध के दौरान नौकरी पाने वाले छात्रों को बड़ी सहूलियत मिलेगी।

लविवि के संशोधित पीएचडी अध्यादेश में शोध के दौरान नौकरी लगने वाले छात्रों को विशेष राहत देने की तैयारी है। इसके लिए विवि ऐसे विद्यार्थियों को यह सुविधा देगा कि नौकरी लग जाने पर वह अपनी पीएचडी को पार्ट टाइम में बदलवा कर जारी रख सकें। दरअसल, किसी पीएचडी में अध्ययनरत शोधार्थी की नौकरी लग जाने के बाद वह अपनी थीसिस पूरी नहीं कर पाता है और पीएचडी बीच में ही छोड़ देता है। इससे शोधार्थी व विश्वविद्यालय दोनों को नुकसान होता है। नई व्यवस्था से अधिकतम छात्र अपनी पीएचडी पूरी कर सकेंगे। (संवाद)

नए विद्यार्थियों से संवाद

लखनऊ। लविवि के रसायन शास्त्र विभाग की ओर से शुक्रवार को सत्र 2022-23 के नव प्रवेशित पीएचडी विद्यार्थियों से संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने नए शोधार्थियों को शोध का महत्व और उसकी बारीकियों को समझाया। उन्होंने कहा कि शोधार्थी के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि वह जो भी शोध कर रहा है, उससे समाज को कितना लाभ मिलेगा। उन्होंने शोधार्थियों को अनुसंधान की आवश्यकताओं को पूरे करने के उपाय बताए। (संवाद)

HINDUSTAN PAGE 8

अभिनेता एवं रग्बी फेडरेशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष राहुल बोस शुक्रवार को लखनऊ युनिवर्सिटी पहुंचे और रग्बी प्रतियोगिता के बारे में बताया।

लखनऊ में रग्बी का धूमधड़ाका जून में होगा

लखनऊ। प्रख्यात अभिनेता एवं रग्बी फेडरेशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष राहुल बोस शुक्रवार को लखनऊ के खास मेहमान थे। खेलो इण्डिया यूनिवर्सिटी गेम्स में हो रही रग्बी प्रतियोगिता में आए थे। उन्होंने बताया कि राज्य की रग्बी प्रतिभा को सामने लाने के लिए वह 'लखनऊ कप रग्बी टूर्नामेंट' जून में की जाएगी। जल्द ही प्रदेश में सब जूनियर रग्बी राष्ट्रीय चैंपियनशिप का आयोजन होगा।

रेगुलर पीएचडी को पार्ट टाइम में बदल सकेंगे

एलयू

लखनऊ, संवाददाता। अब किसी भी पीएचडी छात्र की द्वितीय या तृतीय वर्ष में नौकरी लग जाने पर उसे रेजिडेंस पीरियड पूरा करने के लिए बाध्य नहीं होना पडेगा। वह आसानी से अपने रेगुलर पीएचडी प्रोग्राम को पार्ट टाइम में बदल सकेगा।

इस बिंदु को लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा अपने संशोधित पीएचडी अध्यादेश में शामिल किया जा सकता है। इसे संशोधित अध्यादेश तैयार करने वाली कमेटी की आगामी बैठक में रखा जाएगा। अभी तक किसी भी शोधार्थी को नौकरी लग जाने के बावजूद दो साल का रेजिडेंस पीरियड़ पूरा करना पड़ता है। इससे शोधार्थी को कई कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। जिसको लेकर कुछ शोधार्थियों ने एलयू की अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. पूनम टंडन को पत्र व ई-मेल भेजा है। इसमें उन्होंने दूसरे विश्वविद्यालयों का हवाला देते हुए एलयू में भी इसे लागू करने का अनुरोध किया है। जिससे नौकरी मिलने पर शोधार्थी को बार-बार विश्वविद्यालय के चक्कर न लगाना पड़े। साथ ही उन्हें पीएचडी की डिग्री भी मिल जाए। गौरतलब है कि संशोधित पीएचडी अध्यादेश के हिसाब से ही एलयू में पीएचडी कार्यक्रम में दाखिले की बात है।

"आईआईटी धनबाद सहित कई संस्थान व विवि हैं जहां यह व्यवस्था है। एनईपी-2020 के तहत संशोधित पीएचडी अध्यादेश तैयार हो रहा है। डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता, एलयू

i-NEXT PAGE 5

लाइफ मैनेजमेंट भी गर्भ संस्कार कोर्स का हिस्सा

LUCKNOW (26 May): लखनऊ यूनिवर्सिटी के सबसे पॉपुलर सर्टिफिकेट व पीजी डिप्लोमा कोर्स गर्भ संस्कार में अब स्टूडेंट्स को मानव विकास व लाइफ मैनेजमेंट का पाठ भी पढ़ाया जाएगा. इंस्टिट्यूट ऑफ विमेन स्टडीज में सर्टिफिकेट व पीजी डिप्लोमा कोर्स में स्टूडेंट्स को मेंटल हेल्थ, न्यूट्रीशन, न्यूरोलॉजिकल डिवेलपमेंट व गर्भ में शारीरिक व मानसिक बदलाव समेत अन्य विषयों की पढ़ाई कराई जाती है.

बढ़ रही है डिमांड

इंस्टिट्यूट ऑफ विमेन स्टडीज, गर्भ संस्कार कोर्स की समन्वयक डॉ. मानिनी श्रीवास्तव ने बताया कि इस कोर्स की डिमांड तेजी से बढ़ रही है. कोर्स में आवेदन के लिए गाइनिकॉलजिस्ट, नर्सेज, न्यूट्रीशन व हेल्थ सेक्टर से जुड़े लोगों के साथ-साथ होम साइंस, आर्मी मेडिकल फील्ड से भी आवेदन आ रहे हैं.

पीजी डिप्लोमा कोर्स

डॉ. मानिनी ने बताया कि विभाग में गर्भ संस्कार का सर्टिफिकेट व पीजी डिप्लोमा कोर्स चलता है. दोनों कोर्स में 30-30 सीटें निर्धारित हैं. सर्टिफिकेट कोर्स जहां 6 महीने का कराया जाता है वहीं पीजी डिप्लोमा कोर्स की अवधि 1 साल है. 18 हजार रुपये प्रति सेमेस्टर फीस निर्धारित है.

VoL PAGE 6

राजधानी में होगा रग्बी कप

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के मंथन कक्ष में अभिनेता एवं निर्देशक राहुल बोस रग्बी के राष्ट्रीय खिलाड़ी जिन्होंने 15 राष्ट्रीय और 5 अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट खेल कर देश विदेश में रग्बी का नाम रोशन किया है। राहुल बोस भारतीय रग्बी एसोसिएशन के अध्यक्ष भी है और इसलिए आज उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो आलोक कुमार राय के साथ मिलकर लखनऊ रग्बी कप का उद्घाटन किया। इस अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद के अध्यक्ष प्रो. रूपेश कुमार ने रग्बी एसोसिएशन के समस्त पदाधिकारियों का स्वागत किया। प्रो आलोक कुमार राय ने राहुल बोस को स्मृति चिन्ह एवं अंग वस्त्र देकर उन्हें सम्मानित किया। उद्घाटन के अवसर पर राहुल बोस ने रग्बी खेल के विकास एवं उससे संबंधित प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलाने की बात की और बताया कि रग्बी खेल को प्रोत्साहन देने के लिए ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को आगे लाया जायेगा जिससे उनमें खेल की भावना विकसित हो और उनके द्वारा रग्बी खेल के द्वारा भारत के लिए पदक लाया जाए। साथ ही कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने राहुल बोस को धन्यवाद देते हुए कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय खेलों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और खेलो को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है, जिससे छात्र-छात्राओं में सभी प्रकार के खेलो में उनकी प्रतिभागिता बढ़े और पदक लाकर वह राष्ट्र का नाम रोशन करें। इस अवसर पर रग्बी एसोसिएशन के सचिव अमित कुमार डे, राजेश पाल अध्यक्ष, मुजीबुल्ला खान, और शशिकांत वर्मा तथा डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रो पूनम टंडन, प्रो संगीता साहू निदेशक आईक्यूएसी एवं रग्बी के समस्त खिलाड़ी उपस्थित रहे।

JAGRAN CITY PAGE III

अंशकालिक में बदल सकेंगे रेगुलर पीएचडी

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय आगामी शैक्षिक सत्र 2023-24 में पीएचडी प्रवेश पाने वाले शोधार्थियों को बड़ी राहत दे सकता है। जिनकी पीएचडी के रेजिडेंस पीरियड (करीब दो साल कैंपस में रेगुलर उपस्थिति) के दौरान कहीं नौकरी लग जाती है तो वह रेगुलर पीएचडी को पार्ट टाइम में बदल सकते हैं। लवि इस सुविधा को संशोधित आर्डिनेंस में शामिल करने पर विचार कर रहा है।

डीन एकेडमिक्स प्रो पूनम टंडन ने बताया कि वर्तमान व्यवस्था के अनुसार पीएचडी वाले शोधार्थियों को करीब दो साल रेगुलर उपस्थिति अनिवार्य होती है। इस बीच यदि किसी की नौकरी लग गई तो या तो पीएचडी छोड़े या फिर नौकरी। इससे बहुत से शोधार्थियों की पीएचडी छूट जाती है। तमाम छात्र इस संबंध में मिलने भी आ चुके हैं।

पीएचडी छात्राओं के लिए संवाद सत्र

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग ने शनिवार को सत्र 2022-23 में नव प्रवेशित पीएचडी के विद्यार्थियों के साथ संवाद सत्र का आयोजन किया। विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने छात्र-छात्राओं से बातचीत कर विभाग की विशेषताओं एवं रसायन विज्ञान के क्षेत्र में हाल के विकास के बारे में भी बताया। उन्होंने सभी छात्रों से उनकी शोध रुचि के क्षेत्र के बारे में भी पूछा और आश्वासन दिया कि उन सभी की अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हर उपाय किए जाएंगे। संवाद कार्यक्रम में विभाग के सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे। (जासं)

एमसीए की छह, बीटेक सम सेमेस्टर परीक्षाएं सात जून से

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने एमसीए, बीटेक व बीफार्मा की सम सेमेस्टर परीक्षाओं का कार्यक्रम जारी कर दिया। एमसीए चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं छह से 10 जून तक, बीटेक छठे सेमेस्टर की परीक्षाएं सात से 19 जून, आठवें सेमेस्टर की परीक्षाएं आठ से 14 जून आयोजित की जाएंगी। वहीं, डीफार्मा प्रथम वर्ष और बीफार्मा चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं आठ से 19 जून तक होंगी। www.lkouniv.ac.in पर विस्तृत डेटशीट अपलोड कर दी है।

'खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए होगा काम'

जासं, लखनऊ : लखनऊ कप के जरिये यहां रग्बी की शुरुआत करेंगे। रग्बी को बढ़ाने के लिए सरकार के साथ मिलकर दो जिलों से एमओयू हुआ है। इन जिलों में हमारी टीम सरकारी अधिकारियों व स्कूलों में बच्चों से मिलकर उनको प्रोत्साहित करेगी। यही नहीं, किसी भी खेल को विकसित करने के लिए जमीनी स्तर पर काम करने की जरूरत है, ताकि प्रतिभाओं को तराशा जा सके। ये बातें अंतरराष्ट्रीय रग्बी खिलाड़ी एवं फिल्म अभिनेता राहुल बोस ने शुक्रवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में कही।

भारतीय रग्बी एसोसिएशन के अध्यक्ष राहुल बोस ने लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के साथ मिलकर लखनऊ रग्बी कप का उद्घाटन भी किया। उप्र में खेल की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए फिल्म अभिनेता ने लखनऊ रग्बी कप के प्रमोशन के लिए लोगों से अपील भी की।

भारतीय रग्बी टीम का रहे हिस्सा : छह साल की उम्र से ही अपने स्कूल के नाटकों में भाग लेने वाले राहुल एक बेहतरीन अभिनेता ही नहीं, बल्कि दिग्गज रग्बी खिलाड़ी भी रहे हैं। राहुल बोस ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर करीब दस साल से अधिक समय तक रग्बी में जलवा बिखेरा। यही नहीं, उन्होंने मशहूर क्रिकेटर और सैफ अली खान के पिता मंसूर अली खान पटौदी से क्रिकेट की बारीकियां भी सीखीं। बेंगलुरु में जन्मे राहुल बोस कहते हैं कि बचपन में उनकी मां कुमुद बोस ने बाक्सिंग और रग्बी से परिचय करा दिया था। राहुल को बाक्सिंग में राष्ट्रीय स्तर पर सिल्वर मेडल भी मिला है। राहुल बोस ने आठ साल तक एशियाई संघ रग्बी चैंपियनशिप में भाग लिया। वे भारतीय रग्बी टीम के पहले चेहरे हैं, जिन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। राहुल कहते हैं कि अधिकतर खिलाड़ी आर्थिक रुप से कमजोर होते हैं। हमारा प्रयास है कि जो प्रतिभावान हैं उनको स्कूल से ही सहयोग करें। अभी ये काम हम यूपी से शुरू कर रहे हैं। भविष्य में पूरे देश में रग्बी को एक समृद्ध व लोकप्रियता के लिए अभियान चलाएंगे।

लखनऊ विश्वविद्यालय में लखनऊ रग्बी कप का उद्घाटन करते अभिनेता एवं रग्बी खिलाड़ी राहुल बोस, साथ में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय व अन्य ● जागरण

कई बड़ी फिल्मों में किया काम

वर्ष 1988 में 'द परफेक्ट मर्डर' से हिंदी फिल्मों में अपने करियर की शुरुआत करने वाले राहुल ने कई बेहतरीन फिल्मों में काम किया। इनमें 'झंकार बीट्स', 'प्यार के साइड इफेक्ट्स', 'मान गए मुगल ए आजम', 'चमेली', 'शौर्या' और 'दिल धड़कने दो' शामिल हैं। इसके अलावा उन्होंने 'पूर्णा : रेज है नो लिमिट' का निर्देशन करने के साथ ही प्रोड्यूस भी किया।

RASHTRIAYA SAHARA PAGE 7

लविवि में कहानियों से मंच हुआ गुलजार

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के डीपीए सभागार में हिंदुस्तानी अकेडमी प्रयागराज के सौजन्य व राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान एवं डेल्फिक एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में कहानी पाठ का कार्यक्रम ' कैसे कहूं' का आयोजन किया गया। जिसमें कथाकारों ने अपनी कहानियों से श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। पद्मश्री विद्याविंदु की अध्यक्षता में हुए कहानी पाठ में सासाराम बिहार की कथाकार कत्यायिनी ने स्त्री विमर्श की कहानी चाहत, मुंबई के राजेश श्रीवास्तव ने मानवीय प्रेम संबंधों पर आधरित छह जन्मों का बंधन,वरिष्ठ आईएएस अधिकारी डा. अखिलेश मिश्र ने पिता और पुत्र के संबंधों को लेकर 'बदला', महेंद्र भीष्म ने कवि सम्मेलन जगत की विसंगतियों को उजागर करती कहानी 'आप भी' डा. विद्या बिंदू सिंह ने 'वनदेई' व्यंग्यकार पंकज प्रसून ने हास्य कहानी 'फुन्नी दादा की प्रेम कहानी वाया शिलाजीत और मोबाइल' डा. शोभा त्रिपाठी ने जीवन की कशमकश दर्शाती कहानी 'लक्ष्मण रेखा ने उस पार' प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त तरुणा सिंह एवं रुचि मिश्रा ने भी अपनी कहानियों में स्त्रियों से जुड़े मुद्दे उठाए। कार्यक्रम का संचालन कवयित्री सरला शर्मा ने किया। रंगकर्मी विनोद मिश्रा ने कहा कि कहानियों को खोजना नहीं पड़ता, हर इंसान की जिंदगी एक कहानी है। विद्या बिंदु सिंह ने कहा कि कहानी पाठ की परंपरा खत्म होती जा रही है। कथाकारों को पाठकों की अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए ऐसी कहानियां लिखनी चाहिए जिनका स्टेज से वाचन और मंचन भी हो सके।

THE PIONEER PAGE 2

ORIENTATION

The department of chemistry, University of Lucknow, organised an orientation session with the newly-admitted PhD students of session 2022-23. Head of the department Prof Anil Mishra interacted with the students and spoke on the specialities of the department. He told them about the recent advances in the field of chemical sciences. He said that discipline, regularity, ethics, and smart as well hard work play a pivotal role in the growth of a PhD student.

RUGBY CUP

Actor Rahul Bose, who is also the president of Indian Rugby Association and a rugby player himself, inaugurated Lucknow Rugby Cup at Lucknow University. Also present was LU Vice-Chancellor

Prof AK Rai. Bose has represented India in 15 national and five international rugby tournaments. Lucknow University Athletic Association president Prof Rupesh Kumar welcomed all the members of the Rugby Association. Bose talked about promoting rugby and associated games at the national level.

TOI PAGE 4

Parents should encourage kids to take up sports: Bose

Anjanaya Singh | TNN

Lucknow: Actor and rugby player Rahul Bose on Friday said that parents should encourage their children to join sports to stay fit and healthy.

Bose, who is also the president of the Indian Rugby Football Union, visited the Lucknow University campus to launch the Lucknow Rugby Cup. "I would love to see that rugby excites everyone like other sports do. We have been working on promoting sports in all parts of the county. Sportspersons from around 40% of the districts in our country play rugby which goes unnoticed as rugby is not shown on television," he said.

Expressing gratitude to the people working for the promotion of rugby at grassroots, he said: "The growth of rugby would have been impossible without the support of universities in Uttar Pradesh, Bihar, Punjab, Haryana, Maharashtra and Odisha.

"Parents should encourage their children to take up sports the same way they ask them to pursue courses in medical or engineering. They should ask children to play after giving their examinations and completing homework. After I got into sports, I got fitter even though I got lesser hours to sleep," Bose said.

"We need to fill the stadiums with athletes who are not able to give time to sports due to academic pressure," he added.

Manoj Chhabra

Actor & rugby player Rahul Bose with LU VC Prof Alok Rai

AMRIT VICHAR PAGE 7

प्रदेश में रग्बी खेल को मिलेगा बढ़ावा

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

आयोजन

● लखनऊ विश्वविद्यालय पहुंचे अभिनेता राहुल बोस, कुलपति की मौजदूगी में रग्बी कप का हुआ उद्घाटन

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश में रग्बी खेल को बढ़ावा दिया जायेगा। इसकी शुरुआत फिल्म अभिनेता व भारतीय रग्बी एसोसिएशन के अध्यक्ष राहुल बोस करेंगे। इसके लिए वह शुक्रवार को लखनऊ विश्वविद्यालय पहुंचे जहां कुलपति प्रोफेसर आलोक राय की मौजदूगी में रग्बी कप का उद्घाटन किया गया।

मीडिया से बातचीत में अभिनेता ने कहा कि खेलों को बढ़ावा में विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि जैसे छात्र डॉक्टर और इंजीनियर बनने का सपना देखते हैं उसी प्रकार से अधिक से अधिक छात्र खिलाड़ी बनने का सपना देखें। उन्होंने बताया कि वह खुद रग्बी के राष्ट्रीय खिलाड़ी जिन्होंने 15 राष्ट्रीय और 5 अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट खेल कर देश विदेश में रग्बी का नाम रोशन किया है।

इस मौके पर प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने राहुल बोस को स्मृति चिन्ह एवं अंग वस्त्र दे कर उन्हे सम्मानित किया। उद्घाटन के अवसर पर राहुल बोस ने रग्बी खेल के विकास एवं उससे संबंधित प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलाने की बात की और बताया कि रग्बी खेल को प्रोत्साहन देने हेतु ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को आगे लाया जाएगा जिससे उनमें खेल की भावना विकसित हो और उनके द्वारा रग्बी खेल के द्वारा भारत के लिए पदक लाया जाए।

लविवि रग्बी ट्राफी का उद्घाटन करने पहुंचे फिल्म अभिनेता राहुल बोस। अमृत विचार

LOKSATYA PAGE 3

रग्बी के राष्ट्रीय खिलाड़ी राहुल बोस सम्मानित

लखनऊ, लोकसत्य। लखनऊ यूनिवर्सिटी में अभिनेता राहुल बोस रग्बी के राष्ट्रीय खिलाड़ी जिन्होंने 15 राष्ट्रीय और 5 अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट खेल कर देश विदेश में रग्बी का नाम रोशन किया है राहुल बोस जी भारतीय रग्बी एसोसिएशन के अध्यक्ष भी है और इसलिए आज लखनऊ विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो आलोक कुमार राय जी के साथ मिल कर लखनऊ रग्बी कप का उद्घाटन किया। इस अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद के अध्यक्ष प्रो रूपेश कुमार जी ने रग्बी एसोसिएशन के समस्त पदाधिकारियों का स्वागत किया। प्रो आलोक कुमार राय जी ने श्री राहुल बोस जी को स्मृति चिन्ह एवं अंग वस्त्र दे कर सम्मानित किया । इस अवसर पर सचिव अमित कुमार डे राजेश पाल अध्यक्ष मुजीबुल्ला खान शशिकांत वर्मा पूनम टंडन दुर्गेश श्रीवास्तव एवं रग्बी के समस्त खिलाड़ी शामिल रहे।

JANSANDESH TIMES PAGE 3

साबरमती आश्रम लखनऊ में ? प्रो. आलोक राय की अवधारणा

खबर मिली कि लखनऊ विश्वविद्यालय में बापू के आश्रम (साबरमती) की तर्ज पर एक प्रतिकृति बनायी जा रही है। मकसद है कि छात्रों को राष्ट्रपिता से विस्तृत तथा सम्यक तरीके से अवगत कराया जा सके।

आह्लादमयी अनुभूति इससे हुई की बापू के महाप्रस्थान के 75 वर्षों बाद भी ऐसे अनूठे विचार उपजे। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक राय कल्पना करते हैं कि गांधीजी आज होते तो इस टीवी, मोबाइल, इंटरनेट आदि के युग में क्या सोचते ? गांधीजी की मजेदार आदतों की बाबत प्रो. राय को स्मरण हो आया कि डाक से मिले पत्रों के लिफाफों का पुनः उपयोग खत लिखने के लिए बापू कैसे करते थे। लखनऊ विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा जांच के बाद ए-डबल-प्लस की ग्रेडिंग इन्हीं के कार्यकाल में मिली थी। पहला संस्थान है लखनऊ विश्वविद्यालय जिसने नैक मूल्यांकन में ऐसी ग्रेडिंग पायी। प्रो. आलोक राय के आकलन में उनकी यह सपनों की कार्ययोजना भारत

जो भारत की स्वतंत्रता के आन्दोलन के मुख्य केन्द्रों में विशेष था। इस आश्रम ने महात्मा गांधी द्वारा सिविल प्रतिरोध आन्दोलन को दर्शाते हुए, एक आदर्श स्थल का आकार लिया था। इसका नाम साबरमती आश्रम रखा गया क्योंकि साबरमती नदी तट पर स्थित है। इसका निर्माण दोहरे लक्ष्य हेतु एक ऐसे संस्थान के रूप में करवाया गया जो सत्य की खोज जारी रखे। साथ ही अहिंसा को समर्पित कार्यकर्ताओं के ऐसे समूह को तैयार करे जो भारत को स्वतंत्रता दिला सकें। सभी को एक मंच पर लाकर कार्य हो सके। आश्रम में था। इस सरकारी निर्णय के विरुद्ध यात्रा इसी आश्रम से शुरू की गई थी। इस सत्याग्रह में ब्रिटिश जेलों को 60,000 स्वतंत्रता सेनानियों से भर दिया गया था। बातचीत के दौरान प्रो. आलोक राय को सलाह दी कि लखनऊ विश्वविद्यालय में बनने वाली प्रतिकृति में दांडी नमक सत्याग्रह का परिदृश्य विशेष रूप से पेश हो क्योंकि यही साबरमती आश्रम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी। गांधीजी ने तभी घोषणा भी की थी कि वे दांडी सागर तट से स्वतंत्रता पाकर ही लौटेंगे।

प्रो. आलोक राय द्वारा रेखांकित चित्र से प्रतीत होता है कि यह जन आकर्षण का महत्वपूर्ण केंद्र निश्चित ही बनेगा। कारण यही है कि संघर्ष और सत्याग्रह जो बापू ने चलाए वे जानने वालों की उत्सुकता की संतुष्टि भी करेगा। आश्रम में गांधीजी जिस कुटिया में रहते थे, जो चश्मा पहनते थे, उनके परिधान, लाठी, चरखा गांधी जी की मूर्ति के साथ ही अन्य चीजों को लखनऊ विश्वविद्यालय के गांधी आश्रम में तैयार किये जाएंगे। इस प्रोजेक्ट पर विश्वविद्यालय का फाइन आर्ट विभाग और मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग साथ काम करेगा। प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि गांधी आश्रम के साथ ही देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले गुमनाम शहीदों की एक गैलरी भी बनेगी।

इसके लिए सूची तैयार की जा रही है। गांधीवादी आयोजनों की दृष्टि से प्रो. आलोक राय की मनोरचना जब रूप ले